स्नातक (प्रतिष्ठा) - II
मैथिली
तृतीय पत्र

डॉ० राज कुमार राय
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

'शिक्षा' निबंधक समीक्षा

निबंध संग्रह 'संकलन' मे संकलित 'शिक्षा' निबंधक लेखक म० म० मुकुन्द झा 'बख्शी' मिथिलाक प्रचलित शिक्षा व्यवस्था सँ चिन्तित छथि, ओ भारत आ अन्यान्य जातिक शिक्षा व्यवस्थाक तुलना मिथिलाक शिक्षा सँ करैत छथि आ निराशा होइत कहैत छथि जे भारतवर्षीय प्रजा सभ सर्वथा अपन-अपन उन्नतिक चेष्टामध्य बुद्धिपूर्वक भऽ रहल अछि। परन्तु मिथिलाक प्रजा एखन धरि ताहि उन्नतिक अन्वेषणाके प्रायः अज्ञानवश छुटि नहि कयलक अछि। मैथिल जातिक उन्नति हो कोना? हमरालोकनि अपनाकेँ उन्नतिमूलभूत वस्तु दिशा दृष्टिपात नहि करैत छी।

ओ केओ साम्प्रतिक प्रचलित शिक्षा प्रणालीक परिशोधनार्थ समीक्षा करबा हेतु आगु बढ़ैत छथि जकरा प्रायः सबहि तत्पक्षपाती लोकक आलोचनाक शिकार होबए पड़ैत अछि।

शिक्षाक मुख्य चारि भेद मानल छैक - शारीरिक, मानसिक, धार्मिक आओर नैतिक, चारू प्रकारक शिक्षासँ चारि प्रकारक शक्ति उत्पन्न होइछ जे परस्पर मिलिक मनुष्यक पुरुषार्थक साधन होइत अछि। एहि मध्य शारीरिक आओर मानसिक शक्तिक परस्पर एहन घनिष्ठ संबंध छैक जे एहि दुनूमेसँ एकक हानिसँ दोसर अवश्य नष्ट भऽ जाइछ। जेना शारीरिक क्रियासँ स्वस्थ रहलाक भागी प्रसन्न होइछ। ताहिना मानसिक स्मरणशक्तिक लेल आवश्यक अछि। पूर्वजलोके कयल गेल आयाम कतेक लोकलोके शरीरके संगठित रखने रहैत अछि जाहिसँ शारीरिक तथा मानसिक स्फूर्ति एकरूप बनल रहैत छैक।

तकर एखन मैथिल जातिक बालक मध्य सर्वथा अभाव, विशेषतः संस्कृत पढनिहार छात्रमध्य। ओलोकनि ओकरा केवल पहलमानक वा बुढ़िक कर्तव्य थिक ई मानि अपनाकेँ एहि दुर्व्यसनसँ बचौने रहब निज कर्तव्य बुझैत छथि जे हुनकर कुण्ठित बुद्धिक परिचायक अछि। तृतीय आ चतुर्थ धार्मिक आ नैतिक शिक्षाक महत्व पर जोड़ देल जाय। शरीर आ मन दुहुसँ घनिष्ठ संबंध छैक, आओर नैतिक शिक्षा आ व्यवहारिक शिक्षासँ गुरु-शिष्यक परस्पर व्यवहारसँ पृथक' समस्त नीति आओर विज्ञान

Scanned with CamScanner

पर्यन्तक शिक्षा देल गेल अछि।

प्राचीनकालमे शिक्षा लेल दूर-दूर देशसँ लोक आबैत छल। शिक्षामे केन्द्र मिथिला आ भारतमे प्रसिद्ध छल। शिक्षा प्राप्त कए लोक अपनाके धन्य मानैत छल। ताहि शिक्षाके आन छात्र होइत देखि मन क्षुब्ध होइत अछि। मिथिलाक बालक प्राचीन आ उपयोगी शिक्षाक महत्वसँ अनभिज्ञ भऽ रहल अछि। एकमात्र मिथिलासँ दिनानुदिन मिथिला शारीरिक, नैतिक आओर धार्मिक शिक्षासँ वंचित भऽ केवल मानसिक शिक्षाक अवलम्ब कऽ एखनो गौरवान्वित अछि। परन्तु एहि पथ्य एकहाति देखि लोकक आबो किछु दिनानुदिन शिथिला भेल जाइछ।

आब परिणाम कहल जा सकैछ जे मूलबाति की? मानसिक शिक्षासँ शास्त्रीय शिक्षा अभिप्रेत अछि जे यद्यपि देशान्तरक अपेक्षाँ मिथिला पथ्य एखनो बहुत बढ़ल अछि। अतएव आइयोर जगह पर अनेको विद्वान मिथिलाक्षेत्र मे छथि किन्तु ओ लोकनि प्रसिद्ध किएक नहि भऽ पबैत छथि? परन्तु किछु व्यक्ति जे प्रसिद्ध पबैत छथि तऽ वर्तमान विद्वान गणक लोकनि हुनका तुच्छ बुझैत छथि।

Scanned with CamScanner

किन्तु एहेन प्राचीन शिक्षा पाबि मिथिलाक पावन भूमि के यशस्वी विद्वान लोकनि अपन शिक्षाके माध्यम रौशन कयने छथि। जाहिमे - कुमारिलभट्ट, मण्डन मिश्र, मुरारि मिश्र, पक्षधर मिश्र, महेश ठाकुर, गोकुलनाथ उपाध्याय आदि अनेको विद्वान लोकनि छथि।

निष्कर्षतः म॰ म॰ मुकुन्द झा 'बख्शी' अपन निबन्धमे मिथिलाक वर्तमान स्थितिक प्राचीन स्थितिक तुलना कयने छथि। जाहिमे प्राचीनकालक शिक्षा व्यवस्था मानव जातिके लेल सर्वोपरि छल। मानवताक सम्पूर्ण विकासक लेल अति महत्वपूर्ण अछि जे आधुनिक परिपेक्ष्यमे नहि भेटैत अछि। शिक्षाके चारि प्रकारके वर्णन कय मिथिलाक प्राचीन गौरवताक उजागर कयने छथि। आधुनिक मिथिलाक स्थिति प्राचीन कालसँ बहुत ह्रास भेल आ प्राचीनकाल विद्वान लोकनिसँ मिथिलाक गौरवक नीक विश्लेषण भेल अछि।

Rinku Ray
13/04/2020

Scanned with CamScanner